Saptashloki Durga

अथ सप्तश्लोकी दुर्गा

जो व्यक्ति नियमित रूप से इस सप्तश्लोकी दुर्गा का पाठ करता है मां उसकी सभी प्रकार से रक्षा करती है एवं उसे सदबुद्धि प्रदान करती है।

Saptashloki Durga

शिव उवाच

देवी त्वं भक्तसुलभे सर्वकार्यविधायिनी ।

कलौ हि कार्यसिद्ध्यर्थमुपायं ब्रूहि यत्नतः ।।

देव्युवाच

शृणु देव प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्टसाधनम् ।

मया तवैव स्नेहेनाप्यम्बास्तुतिः प्रकाश्यते ।।

विनियोग

ओम् अस्य श्रीदुर्गासप्तश्लोकीस्तोत्रमहामन्त्रस्य नारायण ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः,
श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः , श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थं
सप्तश्लोकीदुर्गापाठे विनियोगः ।

ज्ञानिनामपि चेतांसि देवि भगवती हि सा ।

बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ।। १ ।।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः

स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।

दारिद्रयदुःखभयहारिणि का त्वदन्या

सर्वोपकारकरणाय सदार्द्र चित्ता ।। २ ।।

सर्वमंगलमंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।

शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ।। ३ ।।

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।

सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ।। ४ ।।

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।

भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवी नमोऽस्तु ते ।। ५ ।।

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।

त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां

त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ।। ६ ।।

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।

एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरि विनाशनम् ।। ७ ।।

इति सप्तश्लोकी दुर्गा सम्पुर्णा ।।

शिवजी बोले

हे देवी ! तुम भक्तों के लिये सुलभ हो और समस्त कर्मों का विधान करनेवाली हो। कलियुग में कामनाओं की सिद्धि हेतु यदि कोई उपाय हो तो उसे अपनी वाणी द्वारा सम्यकरूपसे व्यक्त करो।

देवी ने कहा

हे देव ! आपका मेरे ऊपर बहुत स्नेह है। कलियुग में समस्त कामनाओं को सिद्ध करने वाला जो साधन है वह बतलाऊँगी , सुनो ! उसका नाम है अम्बास्तुति।

वे भगवती महामाया देवी ज्ञानियों के भी चित्त को बलपूर्वक

खींचकर मोह में डाल देती हैं ।। १ ।।

माँ दुर्गे ! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय हर लेती हैं और स्वस्थ पुरुषों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें परम कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती हैं । दुःख, दरिद्रता और भय हरनेवाली देवी ! आपके सिवा दूसरी कौन है, जिसका चित्त सबका उपकार करने के लिए सदा ही दयार्द्र रहता हो ।। २ ।।

नारायणी ! आप सब प्रकार का मंगल प्रदान करनेवाली मंगलमयी हैं, आप ही कल्याणदायिनी शिवा हैं । आप सब पुरुषार्थों को सिद्ध करने वाली, शरणागतवत्सला, तीन नेत्रों वाली गौरी हो । आपको नमस्कार है ।। ३ ।।

शरणा में आये हुए दिनों एवं पीड़ितों की रक्षा में संलग्न रहनेवाली तथा सबकी पीड़ा दूर करनेवाली नारायणी देवी ! आपको नमस्कार है ।। ४ ।।

सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न दिव्यरूपा दुर्गे देवी ! सब भयों से हमारी रक्षा कीजिये आपको नमस्कार है ।। ५ ।।

देवी ! आप प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट कर देती हो और कुपित होने पर मनोवांछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो लोग आपकी शरण में जा चुके हैं, उनपर विपत्ति तो आती ही नहीं ।

आपकी शरण में गए हुए मनुष्य दूसरों को शरण देनेवाले हो जाते हैं ।। ६ ।।

सर्वेश्वरि ! आप इसी प्रकार तीनों लोकों की समस्त बाधाओं को शान्त करें और हमारे शत्रुओं का नाश करती रहें ।। ७ ।।